Date - 8/07/2020

Dr. Sanehlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. - Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. - 8409587640

Class - B.A. - II (Hons.)

Topic - Method of Judgment.

Scanned with CamScanner

अनौपचारिक तर्कदोष

वे सभी दोष जो वैधता के नियमों के उल्लंघन के कारण उत्पन्न नहीं होते, बल्कि ये युक्ति की अन्य विशेषताओं, जैसे, विषय-वस्तु आदि में त्रुटि होने के कारण उत्पन्न होते हैं। किसी युक्ति की स्थापना जब किसी ऐसी परिकल्पना (Presumption) या मान्यता को स्वीकार कर लिया जाता है, जो प्रामाणिक नहीं होती है, तो वहाँ अनौपचारिक तर्कदोष उत्पन्न होते हैं।

अनौपचारिक दोषों के निम्नलिखित प्रकार हैं

प्रासंगिकत्व तर्कदोष

जब किसी युक्ति के आधार-वाक्यों में प्रस्तुत तथ्यों के कथन निष्कर्ष में प्रतिपादित तथ्यों के कथनों के लिए साक्ष्यों को प्रस्तुत करने में सक्षम नहीं होते हैं, तो वहाँ प्रासंगिकत्व तर्कदोष उत्पन्न होता है। स्पष्ट है कि इस स्थिति में युक्ति के आधार-वाक्य निष्कर्ष को सिद्ध करने के लिए अप्रासंगिक हो जाते हैं। तर्कशास्त्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के प्रासंगिकरण दोषों को स्वीकार किया गया है। इनमें से कुछ अत्यन्त प्रचलित और मुख्य तर्कदोष निम्नलिखित हैं

अज्ञानमूलक तर्कदोष

जब किसी तर्कवाक्य को इस आधार पर सत्य स्वीकार कर लिया जाता है कि उसे असत्य सिद्ध नहीं किया जा सकता अथवा किसी तर्कवाक्य को इस आधार पर असत्य सिद्ध कर लिया जाता है कि उसे सत्य सिद्ध नहीं किया जा सकता, इन दोनों स्थितियों में जो दोष उत्पन्न होता है, उसे अज्ञानमूलक तर्कदोष कहा जाता है। उदाहरण के लिए, ईश्वर के अस्तित्व को किसी भी

Scanned with CamScanner

प्रमाण द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता।

अतः नास्तिक इसे अस्वीकार करते हैं, क्योंकि उसकी सत्ता को सिद्ध नहीं किया जा सकता और आस्तिक उसे इसलिए स्वीकार कर लेते हैं, क्योंकि ईश्वर के अस्तित्व को तर्क द्वारा अस्वीकार भी सिद्ध नहीं किया जा सकता। अतः इस प्रकार की युक्तियों में आधार-वाक्य उसके निष्कर्ष की प्राप्ति के लिए अप्रासंगिक होते हैं।

अनुप्रयुक्त प्राधिकारमूलक तर्कदोष

जब किसी युक्ति में ऐसे आधार-वाक्य होते हैं, जिनकी सत्यता को सिद्ध करने के लिए किसी ऐसे व्यक्ति अथवा विशेषज्ञ के मत को प्रमाण के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है, जो कि उस क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं होते हैं तथा जिनके मत का खण्डन अन्य विशेषज्ञों के मतों के द्वारा हो जाता है, तब उस स्थिति में अनुप्रयुक्त प्राधिकारमूलक तर्कदोष उत्पन्न होता है।

उदाहरण के लिए, क्रिकेट का कोई खिलाड़ी किसी विशेष कम्पनी की गाड़ी का विज्ञापन करता है, तब वहाँ इस प्रकार का दोष उत्पन्न होता है, क्योंकि क्रिकेट का खिलाड़ी ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में उतना ही अनभिज्ञ है जितना कि कोई सामान्य व्यक्ति।

भावोत्तेजक तर्कदोष

जब किसी युक्ति में 'प्रयुक्त आधार-वाक्यों को वैधानिक करने के लिए तार्किक आधार देने के स्थान पर पाठक के मन में उत्साह, घृणा, क्रोध, उत्तेजना आदि भावों को प्रयोग किया जाता है, तो वहाँ भावोत्तेजक तर्कदोष उत्पन्न होता है।

Scanned with CamScanner

उदाहरण के लिए, जब कोई राजनीतिक चुनाव जीतने के लिए सामान्य जन को अपने पक्ष में करने के लिए अनेक प्रकार की भावनाओं को उत्तेजित करने का प्रयास करता है, तो वहां भावोत्तेजक तर्कदोष उत्पन्न होता है।

दयामूलक तर्कदोष

जब किसी युक्ति में प्रयुक्त आधार-वाक्य युक्ति के निष्कर्ष की सत्यता को तार्किक रूप से स्थापित करने के स्थान पर श्रोता या विरोधी में दया या सहानुभूति उत्पन्न करके निष्कर्ष की स्वीकृति कराने का प्रयास करते हैं, तो दयामूलक तर्कदोष उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई कर्मचारी अपनी पारिवारिक समस्या अथवा किसी व्यक्तिगत समस्या को बताकर अपनी वेतन वृद्धि करने के लिए सहानुभूति की स्थिति उत्पन्न करता है, तो इस स्थिति में दयामूलक तर्कदोष उत्पन्न होता है।

बलप्रयोगमूलक तर्कदोष

जब किसी युक्ति में उसके आधार-वाक्यों द्वारा निष्कर्ष की स्वीकृति के लिए तर्कसंगत साक्ष्यों के स्थान पर बल प्रयोग किया जाता है, तो वहां बलप्रयोगमूलक तर्कदोष उत्पन्न होता है। इस स्थिति में युक्ति के आधार-वाक्य उसके निष्कर्ष के लिए स्पष्टतः तार्किक रूप से प्रासंगिक नहीं होते हैं, लेकिन बलप्रयोग द्वारा निष्कर्ष की स्वीकृति के लिए मनोवैज्ञानिक दबाव आवश्यक अवश्य उत्पन्न हो जाता है।

उदाहरण के लिए, यदि चुनाव में कोई राजनेता हार जाने पर भी अपनी हार को स्वीकार नहीं करता है और वोटिंग मशीन पर दोषारोपण करके बलपूर्वक उसमें परिवर्तन की मांग करता है, तब इस स्थिति में बलप्रयोगमूलक दोष उत्पन्न होता है।

Scanned with CamScanner